इस्लाम धर्म के सिद्धांत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

कोई धर्म बुरा नहीं होता। धर्म को सम्प्रदाय के बंधन में बांध दिये जाने के बाद धर्म संकुचित हो जाता है। धर्म की व्याख्या लोग अपने हित साधन के लिए करते हैं। जिससे धर्म संकुचित हो जाता है। धर्म मानवता के कल्याण के लिये है। धर्म बहुत व्यापक शब्द है। समुद्र के समान गम्भीर है। इस्लाम धर्म दुनिया का एक व्यापक धर्म है। यह शब्द अरबी भाषा का है। इसका अर्थ है– शरण लेना अर्थात् ईश्वर में अपने आपको समर्पित कर देना। इस्लाम धर्म आत्मसमर्पण की शिक्षा देता है। इस्लाम धर्म ये मानता है कि कुरान ईश्वरीय आदेश है। जो कुछ भी उसमें लिखा गया है, वह अल्लाह का वचन है।

इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब थे। उन्होंने अनेक बुराईयों को दूर करके इस्लाम की छवि को सुन्दर बनाया। वे खुदा के पैगम्बर थे। इस्लाम धर्म एकेश्वरवाद को मान्यता देता है। इस्लाम धर्म शिया और सुन्नी दो भागों में विभक्त है। इमाम हुसैन के अनुयायी शिया कहलाते हैं और खलीफा के अनुयायी सुन्नी। दोनों सम्प्रदाय के लोग कुरान और मुहम्मद साहब को मानते हैं। वही स्वर्ग और पृथ्वी का रचयिता है। वह शाश्वत, असीम ईश्वर है। इसी ईश्वर की सत्यता पर कुरान में बल दिया गया है।

ईश्वर सत्य है, इस कुरान वचन के अनुसार ईवर की सत्ता और महत्ता को प्रकट किया गया है। कुरान में ईश्वर के एकत्व और सर्वशक्तिमत्ता के संदर्भ में अनेक आयातें हैं। ईश्वर अपने सच्चे बंदों को सही मार्ग पर चलाता है, उसका न कोई आदि है न अंत, वह शाश्वत और नित्य है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है। वह सदैव जागता रहता है। अपनी इच्छा के अनुसार उसी ने मानव की रचना की है। ईश्वर अपने बंदों को अंधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर लाता है। कुरान में ईश्वर को प्रेम करने वाला, दयालु, कृपालु, मार्गदर्शक, संरक्षक, आश्रयदाता और शांतिदाता कहा गया है।

ईश्वर पुण्यात्माओं और भक्तों का इनाम देता है, वह पापियों को दण्डित करता है। इस्लाम के अनुसार ईश्वर मनुष्य या अन्य किसी वस्तु जड़ या जीवित के रूप में व्यक्त नहीं होता। ईश्वर कोई अवतारी पुरुष नहीं है। ईश्वर का साक्षात्कार उसकी वाणी के रूप में, उसके शब्दों के रूप में मनुष्य को मिलता रहता है। कुरान में ईश्वर के सात गुणों की चर्चा है– हयात अर्थात् जीवन, इल्म अर्थात् ज्ञान, कद्र अर्थात् शक्ति, इरादा या इच्छा, सम, बसर या दृष्टि और वाणी। ईश्वर में कोई विरोधी तत्व नहीं है। उसमें शाश्वत जीवन माना गया है। ईश्वर वर्तमान, भूत और भविष्य का ज्ञाता है। अखिल ब्रह्मांड में स्वर्ग से पाताल तक वह सबकुछ जानता है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है। उसकी इच्छा या संकल्प शक्ति चिरंतन है। ईश्वर के कान नहीं है फिर भी व सबकुछ सुन लेता है, वह त्रिकालदर्शी है।

इस्लाम केवल सिद्धांतों पर बल नहीं देता अपितु कुछ करणीय कार्यों को करने पर बल देता है। कोई व्यक्ति केवल कुरान के कोरे ज्ञान प्राप्त करने से अपने को मुसलमान नहीं कह सकता, पर जो अपने मन और हृदय से इस्लाम में ईमान रखे, वचनों के द्वारा उसको स्वीकार करें और इस्लाम में बताये गये कर्मों का अनुसरण करे वहीं वास्तव में सच्चा मुसलमान है। इस्लाम में मत का उच्चारण, नमाज, जकात, रमजान के महीनें में उपवास और हज करना, ये पांच पवित्र कार्य माने गये हैं। प्रत्येक मुसलमान के लिये नमाज पढ़ना नित्य कर्म माना गया है। नमाज न पढ़ने पर वह पाप का भागी होता है। इस्लाम में पांच बार नमाज पढ़ने का प्रचलन है। नमाज के महत्व के बारे में कहा गया है कि जो व्यक्ति पांचों समय नमाज पढ़ेगा, उसे ईश्वर जन्नत पढ़ेगा। नमाज पढ़ने से पाप दूर होते हैं। आध्यात्मिक विकास और सामाजिक चेतना के विकास के लिए वैयक्तिक एवं सामूहिक नमाज का महत्व है।

इस्लाम में जकात या खैरात का बहुत महत्व है। प्रत्येक मुसलमान का कर्त्तव्य है कि वह अपनी आय का ढ़ाई प्रतिशत अंश गरीबों के उत्थान एवं उपकार के लिए दान दे। इस्लाम में पवित्र रमजान के महीनें में रोजा या उपवास रखना प्रत्येक मुसलमान के लिए आवश्यक माना गया है। मन को सांसारिक चिंताओं से मुक्त रखना तथा सभी विचारों को ईश्वर में केन्द्रीभूत करना उपवास का लक्ष्य है। सहिष्णुता, साहानुभूति, त्याग और आत्मानुशासन का पाठ उपवास या रोजे से प्राप्त होता है।

इस्लाम में हज करना पवित्र कार्य बतलाया गया है। सामान्य अवस्था में प्रत्येक मुसलमान को एक बार हज करना जरूरी माना गया है। चूंकि इस धर्म का प्रारम्भ मक्का में हुआ था, यहीं पर कावा की प्राचीन मस्जिद है। मुहम्मद साहब वहां पर गये थे इसलिए प्रत्येक मुसलमानों को वहां जाकर नमाज अदा करना पवित्र कार्य माना गया है। मक्का पहुंचकर स्नान करके शरीर को स्वच्छ कर नये वस्त्र पहनकर अल्लाह का नाम लेते हुये सात बार कावा की परिकर्मा कर वहां स्थित मुख्य पत्थर का चुंबन प्रत्येक हाजी करते हैं। यही हज की प्रमुख क्रिया है। विश्व के सभी देशों के मुसलमान मक्का में इकट्ठे होते हैं इसलिए ऊंच–नीच, अमीर–गरीब का भेद भाव यहां नहीं रहता। इस्लाम में भाईचारा मैत्री और सज्जनता को बहुत महत्व दिया गया है। इस्लाम के सूफी मत में आत्म विकास को उच्च मत प्राप्त है।